Earth-Trekker's Guide *Godly Light For India* series
Study Aid 1. All the Bible verses in **Hindi** for... Booklet 1,
Divine Selection: God's Developmental Program For Earth.
Jesus is the "Sun of Heaven" & the Light of the World!

Divine Selection

GOD'S DEVELOPMENTAL PROGRAM FOR EARTH

A Plan For Our Planet's Future

From YHWH, The Holy One Of Israel, The Creator Of All The Universe, Who Is Eternally The Light Of The World

This 8-Pages Study-Aid Booklet Is Printable And Includes All The Bible Verses Quoted In Hindi Language

Jesus Christ is God The Son, the Creator of All, the "Sun of Heaven," the "Sun of Righteousness," and the Light of the World...!

Courtesy of ***JesusChristIndia.net***.
Visit also *JesusChristNepal.org & JesusChristBurma.org,* sites *JesusChristSriLanka.org & JesusChristThailand.org,* sites *JesusChristChina.org* and *JesusChristTaiwan.org,* sites *JesusChristKorea.org* and *JesusChristJapan.org ...* for more print-patterns & free Bible-teaching lessons

Matthew 3:1-2 1 उन्ही दिनों यहूदिया के बियाबान मरुस्थल में उपदेश देता हुआ
बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना वहाँ आया।
2 वह प्रचार करने लगा, "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य आने को है।"

Matthew 3:13-17 13 उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे यूहन्ना के
पास उससे बपतिस्मा लेने आया।
14 किन्तु यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा, "मुझे तो स्वयं तुझ से
बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?"
15 उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तो इसे इसी प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर
चाहता है उसे पूरा करने के लिए यही करना उचित है।" फिर उसने वैसा ही होने दिया।
16 और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह जल से बाहर निकाला, आकाश
खुल गया। उसने परमेश्वर के आत्मा को एक कबूतर की तरह नीचे उतरते और अपने
ऊपर आते देखा।
17 तभी यह आकाशवाणी हुई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।"

Matthew 4:4 4 यीशु ने उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है: 'मनुष्य केवल रोटी से ही
नहीं जीता बल्कि वह प्रत्येक उस शब्द से जीता है जो परमेश्वर के मुख से निकालता है। '
" व्यवस्थाविवरण 8:3

Matthew 4:17 17 उस समय से यीशु ने सुसंदेश का प्रचार शुरू कर दिया: "मन
फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

Matthew 7:13-14 13 "सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ
क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश की ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो
उस पर चल रहे हैं।
14 किन्तु कितना सँकरा हैं वह द्वार और कितनी सीमित है वह राह जो जीवन की ओर
जाती हैं। बहुत थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं।

Matthew 7:21-23 21 "प्रभु-प्रभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में नहीं जा
पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता की इच्छा पर चलता हैं वही उसमें
प्रवेश पायेगा।
22 उस महान दिन बहुत से मुझसे पूछेंगे 'प्रभु! हे प्रभु! क्या हमने तेरे नाम से
भविष्यवाणी नहीं की? क्या तेरे नाम से हमने दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं और क्या हमने तेरे
नाम से बहुत से आश्चर्य कर्म नहीं किये?
23 तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं जानता, 'अरे कुकर्मियों, यहाँ से भाग
जाओ।'

Matthew 7:26-27 26 किन्तु वह जो मेरे शब्दों को सुनता हैं पर उन पर आचरण
नहीं करता, उस मूर्ख मनुष्य के समान हैं जिसने अपना घर रेत पर बनाया।
27 वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस मकान से टकराई, जिससे वह मकान
पूरी तरह ढह गया।"

Matthew 10:14-15 14 "यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात न सुने तो
उस घर या उस नगर को छोड़ दो। और अपने पाँव में लगी वहाँ की धूल वहीं झाड़ दो।
15 मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब न्याय होगा, उस दिन उस नगर की स्थिति से सदोम
और अमोरा नगरों की स्थिति कहीं अच्छी होगी।"

Matthew 10:22-23 22 मेरे नाम के कारण लोग तुमसे घृणा करेंगे किन्तु जो अंत
तक टिका रहेगा उसी का उद्धार होगा।
23 वे जब तुम्हें एक नगर में सताएँ तो तुम दूसरे में भाग जाना। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ
कि इससे पहले कि तुम इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य का पुत्र
दुबारा आ जाएगा।

Matthew 10:32-33 32 जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं भी उसे

स्वर्ग में स्थित अपने परम-पिता के सामने अपनाऊँगा।
33 किन्तु जो कोई मुझे सब लोगों के सामने नकारेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित परम-पिता के सामने नकारूँगा।

Matthew 10:37-38 37 "जो अपने माता-पिता को मुझसे अधिक प्रेम करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। जो अपने बेटे बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है।
38 वह जो यातनाओं का अपना क्रूस स्वयं उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता, मेरा होने के योग्य नहीं है।

John 8:12 12 फिर वहाँ उपस्थित लोगों से यीशु ने कहा, "मैं जगत का प्रकाश हूँ जो मेरे पीछे चलेगा कभी अँधेरे में नहींरहेगा। बल्कि उसे उस प्रकाश की प्राप्ति होगी जो जीवन देता है।"

Matthew 11:20-24 20 फिर यीशु ने उन नगरों को धिक्कारा जिनमें उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किये थे। क्योंकि वहाँ के लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा और अपना मन नहीं फिराया था।
21 "अरे अभागे खुराजीन, अरे अभागे बैतसैदा तुम में जो आश्चर्यकर्म किये गये, यदि वे सूर और सैदा में किये जाते तो वहाँ के लोग बहुत पहले से ही टाट के शोक वस्त्र ओढ़ कर और अपने शरीर पर राख मल कर खेद व्यक्त करते हुए मन फिरा चुके होते।'
22 किन्तु मैं तुम लोगों से कहता हूँ न्याय के दिन सूर और सैदा की स्थिति तुमसे अधिक सहने योग्य होगी।
23 और अरे कफरनहूम, क्या तू सोचता है कि तुझे स्वर्ग की महिमा तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो अधोलोक में नरक को जायेगा। क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुझमें किये गये, यदि वे सदोम में किये जाते तो वह नगर आज तक टिका रहता।
24 पर मैं तुम्हें बताता हूँ कि न्याय के दिन तेरे लोगों की हालत से सदोम की हालत कहीं अच्छी होगी।"

Matthew 12:39-42 39 उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "इस युग के बुरे और दुराचारी लोग ही आश्चर्य चिन्ह देखना चाहते हैं। भविष्यवक्ता योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़कर, उन्हें और कोई आश्चर्य चिन्ह नहीं दिया जायेगा।"
40 "और जैसे योन तीन दिन और तीन रात उस समुद्री जीव के पेट में रहा था वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात धरती के भीतर रहेगा।
41 न्याय के दिन नीनेवा के निवासी आज की इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े होंगे और उन्हें दोषी ठहरायेंगे। क्योंकि नीनेवा के वासियों ने योना के उपदेश से मन फिराया था। और यहाँ तो कोई योना से भी बड़ा मौजूद है।
42 न्याय के दिन दक्षिण की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और उन्हें अपराधी ठहरायेगी, क्योंकि वह धरती के दूसरे छोर से सुलेमान का उपदेश सुनने आयी थी और वहाँ तो कोई सुलमान से भी बड़ा मौजूद है।

Matthew 13:3-9 3 उसने उन्हें दृष्टान्तों का सहारा लेते हुए बहुत सी बातें बतायी। उसने कहा कि "एक किसान बीज बोने निकला।
4 जब वह बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज राह के किनारे जा पड़े। चिड़ियाएँ आयी और उन्हें चुग गयीं।
5 थोड़े बीज चट्टानी धरती पर जा गिरे। वहाँ मिट्टी बहुत उथली थी। बीज तुरंत उगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी तो गहरी थी नहीं;
6 इसलिये जब सूरज चढ़ा तो वे पौधे झुलस गये। और क्योंकि उन्होंने ज्यादा जड़ें तो पकड़ी नहीं थीं इसलिये वे सूख कर गिर गये।
7 बीजो का एक हिस्सा कँटीली झाड़ियों में जा गिरा, झाड़ियाँ बड़ी हुई, और उन्होंने उन पौधों को दबोच लिया।
8 पर थोड़े बीज जो अच्छी धरती पर गिरे थे, अच्छी फसल देने लगे। फसल, जितना

बोया गया था, उससे कोई तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना से भी ज़्यादा हुई।
9 जो सुन सकता है, वह सुन ले।"

Matthew 13:18-23 18 "तो बीज बोने वाले की दृष्टान्त-कथा का अर्थ सुनो।
19 वह बीज जो राह के किनारे गिर पड़ा था, उसका अर्थ है कि जब कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश सुनता है और उसे समझता नहीं है तो दुष्ट आकर, उसके मन में जो उगा था, उसे उखाड़ ले जाती है।
20 वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे, उनका अर्थ है वह व्यक्ति जो सुसंदेश सुनता है, उसे आन्नद के साथ तत्काल ग्रहण भी करता है।
21 किन्तु अपने भीतर उसकी जड़ें नहीं जमने देता, वह थोड़ी ही देर ठहर पाता है, जब सुसंदेश के कारण उस पर कष्ट और यातनाएँ आती हैं तो वह जल्दी ही डगमगा जाना है।
22 काँटों में गिरे बीज का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर संसार की चिंताएँ और धन का लोभ सुसंदेश को दबा देता है और वह व्यक्ति सफल नहीं हो पाता।
23 अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता है और समझता है। वह सफल होता है। वह सफलता बोये बीज से तीन गुना, साठ गुना या सौ गुना तक होती है।"

Matthew 13:24-30 24 यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त कथा रखी: "स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिसने अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे।
25 पर जब लोग सो रहे थे, उस व्यक्ति का शत्रु आया और गेहूँ के बीच जंगली बीज बोया गया।
26 जब गेहूँ में अंकुर निकलेऔर उस पर बालें आयी तो खरपतवार भी दिखने लगी।
27 तब खेत के मालिक के पास आकर उसके दासों ने उससे कहा, 'मालिक, तूने तो खेत में अच्छा बीज बोया था, बोया था ना? फिर ये खरपतवार कहाँ से आई?'
28 "तब उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम है।' उसके दासों ने उससे पूछा, 'क्या तू चाहता है कि हम जाकर खरपतवार उखाड़ दें?'
29 "वह बोला, 'नहीं, क्योंकि जब तुम खरपतवार उखाड़ोगे तो उनके साथ, तुम गेहूँ भी उखाड़ दोगे।
30 "जब तक फसल पके दोनों को साथ-साथ बढ़ने दो, फिर कटाई के समय मैं फसल काटने वालों से कहूँगा किपहले खरपतवार की पुलियाँ बना कर उन्हें जला दो, और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरी खत्ती में रख दो।"'

Matthew 13:36-43 36 फिर यीशु उस भीड़ को विदा करके घर चला आया। तब उसके शिष्यों ने आकर उससे कहा, "खेत के खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।"
37 उत्तर में यीशु बोला, "जिसने उत्तम बीज बोया था, वह है मनुष्य का पुत्र।
38 और खेत यह संसार है। अच्छे बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के लोग। खरपतवार का अर्थ है, वे व्यक्ति जो शैतान की संतान है।
39 वह शत्रु जिसने खरपतवार बीजे थे, शैतान है और कटाई का समय है, इस जगत का अंत और कटाई करने वाले हैं स्वर्गदूत।
40 "ठीक वैसे ही जैसे खरपतवार को इकट्ठा करके आग में जला दिया गया, वैसे ही सृष्टि के अंत में होगा।
41 मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उसके राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को पाप के लिये प्रेरित करते हैं,
42 इकट्ठा करके धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस दाँत पीसना और रोना ही रोना होगा।
43 जब धर्मी अपने परम पिता के राज्य में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है, सुन ले!"

Matthew 16:2-4 2 उसने उत्तर दिया, "सूरज छुपने पर तुम लोग कहते हो, 'आज

मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आसमान लाल है'
3 और सूरज उगने पर तुम कहते हो, 'आज अंधड़ आयेगा क्योंकि आसमान धुँधला और लाल है।' तुम आकाश के लक्षणों को पढ़ना जानते हो, पर अपने समय के लक्षणों को नहीं पढ़ सकते।
4 अरे दुष्ट और दुराचारी पीढ़ी के लोग कोई चिन्ह देखना चाहते हैं, पर उन्हें सिवाय योना के चिन्ह के कोई और दूसरा चिन्ह नहीं दिखाया जायेगा।" फिर वह उन्हें छोड़ कर चला गया।

Matthew 16:25-27 25 जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, उसे वह खोना होगा। किन्तु जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोयेगा, वही उसे बचाएगा।
26 यदि कोई अपना जीवन देकर सारा संसार भी पा जाये तो उसे क्या लाभ? अपने जीवन को फिर से पाने के लिए कोई भला क्या दे सकता है?
27 मनुष्य का पुत्र दूतों सहित अपने परमपिता की महिमा के साथ आने वाला है। जो हर किसी को उसके कर्मों का फल देगा।

Matthew 17:1-2 1 छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में ऊँचे पहाड़ पर गया।
2 वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल गया। उसका मुख सूरज के समान दमक उठा और उसके वस्त्र ऐसे चमचमाने लगे जैसे प्रकाश।

Matthew 17:5-6 5 पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते हुए बादल ने आकर उन्हें ढक लिया और बादल से आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!"
6 जब शिष्यों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि धरती पर आँधे मुँह गिर पड़े।

Matthew 19:16-19 16 वहीं एक व्यक्ति था। वह यीशु के पास आया और बोला, "गुरु अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिये?"
17 यीशु ने उससे कहा, "अच्छा क्या है, इसके बारे में तू मुझसे क्यों पूछ रहा हैं? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही है! फिर भी यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता हैं, तो तू आदेशों का पालन कर।"
18 उसने यीशु से पूछा, "कौन से आदेश?" तब यीशु बोला, "हत्या मत कर। व्यभिचार मत कर। चोरी मत कर। झूठी गवाही मत दे।
19 'अपने पिता और अपनी माता का आदर कर' और 'जैसे तू अपने को प्यार करता हैं, 'वैसे ही अपने पड़ोसी से भी प्यार कर।"'

Matthew 21:33-41 33 "एक और दृष्टान्त सुनो: एक ज़मींदार था। उसने अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों ओर बाड़ लग दी। फिर अंगूरों का रस निकालने का गरठ लगाने को एक गढ़ा खोदा और रखवाली के लिए एक मीनार बनायी। फिर उसे बटाई पर देकर वह यात्रा पर चला गया।
34 जब अंगूर उतारने का समय आया तो बगीचे के मालिक ने किसानों के पास अपने दास भेजे ताकि वे अपने हिस्से के अंगूर ले आयें।
35 "किन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ लिया। किसी की पिटाई की, किसी पर पत्थर फेंके और किसी को तो मार ही डाला।
36 एक बार फिर उसने पहले से और अधिक दास भेजे। उन किसानों ने उसके साथ भी वैसा ही बर्ताव किया।
37 बाद में उसने उनके पास अपने बेटे को भेजा। उसने कहा, 'वे मेरे बेटे का तो मान रखेंगे ही।'
38 "किन्तु उन किसानों ने जब उसके बेटे को देखा तो वे आपस में कहने लगें, 'यह तो उसका उत्तराधिकारी है, आओ इसे मार डालें और उसका उत्तराधिकार हथिया लें।'
39 सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे के बाहर धकेल दिया और मार डाला।
40 "तुम क्या सोचते हो जब वहाँ अंगूरों के बगीचे का मालिक आयेगा तो उन किसानों

के साथ क्या करेगा?"
41 उन्होंने उससे कहा, "क्योंकि वे निर्दय थे इसलिए वह उन्हें बेरहमी से मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे को दूसरे किसानों को बटाई पर दे देगा जो फसल आने पर उसे उसका हिस्सा देगें।"
Matthew 24:3-14 3 यीशु जब जैतून पर्वत पर बैठा था तो एकांत में उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, "हमें बता यह कब घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का अंत होने को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?"
4 उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "सावधान! तुम लोगों को कोई छलने न पाये।
5 मैं यह इस लिए कह रहा हूँ कि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे 'मैं मसीह हूँ' और वे बहुतों को छलेंगे।
6 तुम पास के युद्धों की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो तुम घबराना मत! ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं आया है।
7 हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा। अकाल पड़ेगें। हर कहीं भूचाल आयेंगे।
8 किन्तु ये सब बातें तो केवल पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।
9 "उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे, और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो, सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे।
10 उस समय बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा और विश्वास डिग जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकरियों के हाथों सौंपेंगे और परस्पर घृणा करेंगे।
11 बहुत से झूठे नबी उठ खड़े होंगे और लोगों को ठगेंगे।
12 क्योंकि अधर्मता बढ़ जायेगी सो बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा।
13 किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा।
14 स्वर्ग के राज्य का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों को साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त आएगा।
Matthew 24:21-22 21 उन दिनों ऐसी विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने यह सृष्टि रची है, आज तक कभी नहीं आयी और न कभी आयेगी।
22 और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटाने का निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न बचता किन्तु अपने चुने हुओं के कारण वह उन दिनों को कम करेगा।
Matthew 24:29-31 29 "उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद: 'सूरज काला पड़ जायेगा चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।'यशायाह 13:10; 34:4,5
30 "उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत आकाश में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के लोग विलाप करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते देखेंगे।
31 वह जैसे स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों को भेजेगा। फिर वे स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा।
Matthew 24:35 35 चाहे धरती और आकाश मिट जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं मिटेगा।"
Matthew 24:36-39 36 "उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वयं पुत्र। केवल परम पिता जानता हैं।
37 जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
38 वैसे ही जैसे लोग जल प्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते-पीते रहे, ब्याह-शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं चढ़ा।
39 उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक जल प्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले गया। मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा।
Matthew 24:44 44 इसलिए तुम भी तैयार रहो क्योंकि तुम जब उसकी सोच भी

नहीं रहे होंगे, मनुष्य का पुत्र आ जायेगा।
Matthew 28:18-20 18 फिर यीशु ने उनके पास जाकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे गये हैं।
19 सो, जाओ और सभी देशों के लोगों को मेरा अनुयायी बनाओ। तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में, पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा के नाम में उन्हें बपतिस्मा देकर पूरा करना है।
20 वे सभी आदेश जो मैंने तुम्हें दिये हैं, उन्हें उन पर चलना सिखाओ। और याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा।"

Luke 11:27-28
27 फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें कहीं, भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में बोली, "वह गर्भ धन्य है, जिसने तुझे धारण किया। वे स्तन धन्य है, जिनका तूने पान किया है।"
28 इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे है जो परमेश्वर का वचन सुनते है और उस पर चलते है!"

John 3:13
13 स्वर्ग में ऊपर कोई नहीं गया, सिवाय उसके, जो स्वर्ग से उतर कर आया है यानी मानव-पुत्र।

John 14:15
15 "यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे।

John 14:21
21 वह जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है, मुझसे प्रेम करता है। जो मुझमें प्रेम रखता है उसे मेरा परमपिता प्रेम करेगा। मैं भी उसे प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।"

John 14:23-26
23 उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "यदि कोई मुझमें प्रेम रखता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा। और उससे मेरा परमपिता प्रेम करेगा। और हम उसके पास आयेंगे और उसके साथ निवास करेंगे।
24 जो मुझमें प्रेम नहीं रखता, वह मेरे उपदेशों पर नहीं चलता। यह उपदेश जिसे तुम सुन रहे हो, मेरा नहीं है, बल्कि उस परमपिता का है जिसने मुझे भेजा है।
25 "ये बातें मैंने तुमसे तभी कही थी जब मैं तुम्हारे साथ था।
26 किन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे परमपिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ बतायेगा। और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उस तुम्हें याद दिलायेगा।

John 15:10
10 यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करोगे तु तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे। वैसे ही जैसे मैं अपने परमपिता के आदेशों को पातले हुए उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

Revelation 19:11
11 फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार 'विश्वसनीय' और 'सत्य' कहलाता था क्योंकि न्याय के साथ वह निर्णय करता है और युद्ध करता है।

Revelation 19:13
13 उसने ऐसा वस्त्र पहना था जिसे लहू में डुबाया गया था। उसे नाम दिया गया था, "परमेश्वर का वचन।"

Malachi 4:1-2
1 "न्याय का समय आ रहा है। यह गर्म भट्टी -सा होगा। वे सभी गर्वीलें व्यक्ति दण्डित

होंगे। वे सभी पापी लोग सूखी घास की तरह जलेंगे। उस समय वे आग में ऐसी जलती झाड़ी-से होंगे जिसकी कोई शाखा याजड़ बची नहीं रहेगी।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।
2 "किन्तु, मेरे भक्तों, तुम पर अच्छाई उगते सूरज के समान चमकेगी और यह सूरज की किरणों की तरह स्वास्थ्यवर्धक शक्ति देगी। तुम ऐसे ही स्वतन्त्र और प्रसन्न होओगे जैसे अपने बाड़े से स्वतन्त्र हुए बछड़े।

It's extremely important for all of us to remember this:
1) **WE SPEAK TO TRIUNE YHWH GOD** by our prayers.
2) **TRIUNE YHWH GOD SPEAKS TO US** by the words of Holy Scripture, in the Word of God written by His Son.
So we must try to read His words and His Book just as often as we possibly can… on a daily basis!!

Matthew 13:47-50

47 "स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह की मछलियाँ पकड़ी गयी।
48 जब वह जाल पूरा भर गया तो उसे किनारे पर खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर अच्छी मछलियाँ छाँट कर टोकरियों में भर ली गयी किन्तु बेकार मछलियाँ फेंक दी गयी।
49 सृष्टि के अन्त में ऐसे ही होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और धर्मियों में से पापियों को छाँट कर
50 धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस रोना और दाँत पीसना होगा।"

Mark 4:26-29

26 फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये।
27 रात को सोये और दिन को जागे और फिर बीज में अंकूर निकलें, वे बड़ें और पता न ही चले कि यह सब कैसे हो रहा है।
28 धरती अपने आप अनाज उपजाती है। पहले अंकुर फिर बाल और फिर बालों में भरपूर अनाज।
29 जब अनाज पक जाता है तो वह तुरन्त उसे हंसिये से काटता है क्योंकि फसल काटने का समय आ जाता है।"

All verses from the Holy Bible quoted above in Hindi language are taken from the Hindi Easy-To-Read Version.

This is a Study-Aid Booklet for one of many Street Tracts found at...
JesusChristIndia.org
JesusChristNepal.org, JesusChristSriLanka.org,
JesusChristBurma.org, JesusChristThailand.org,
JesusChristChina.org, JesusChristTaiwan.org,
JesusChristKorea.org, JesusChristJapan.org …
JesusChristUSA.org, JesusChristAmerica.org
& **JesusChristIsrael.org** as well...!

Visit these websites for free e-tracts (a.k.a. tract e-books),
for paper-booklet printing patterns, Bible lessons,
online Bible audio & more good stuff !
e-mail: ***etracts@yahoo.com*** *or* ***etracts@gmail.com***